एक वायरस ने सभी को देखभाल करना सिखाया

भोलू और शीनू ने कोविड-19 महामारी के दौरान लांछन व भेदभाव को जाना

new concept
Centre for Development Communication

unicef
for every child

एक वायरस ने सभी को देखभाल करना सिखाया

भोलू और शीनू ने कोविड-19 महामारी के दौरान लांछन व भेदभाव को जाना

"एक वायरस ने सभी को देखभाल करना सिखाया" कहानी को विकसित और डिज़ाइन यूनिसेफ और न्यू कॉन्सेप्ट सेंटर फॉर डेवलपमेंट कम्युनिकेशन (NCCDC) के सहयोग से किया गया है।

यह प्रकाशन क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-नॉन-कॉमर्शियल-शेयर अलाइक 4-0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC BY&SA&4-0 4-0; https: // creativecommons-org/licenses/by&nc&sa/4-0/) के तहत प्रकाशित किया गया था। इस लाइसेंस की शर्तों के तहत, आप गैर-वाणिज्यिक उद्देश्यों के लिए इस कार्य को पुनरू पेश, अनुवाद और अनुकूलित कर सकते हैं, बशर्ते कार्य उचित रूप से उद्धृत हो।

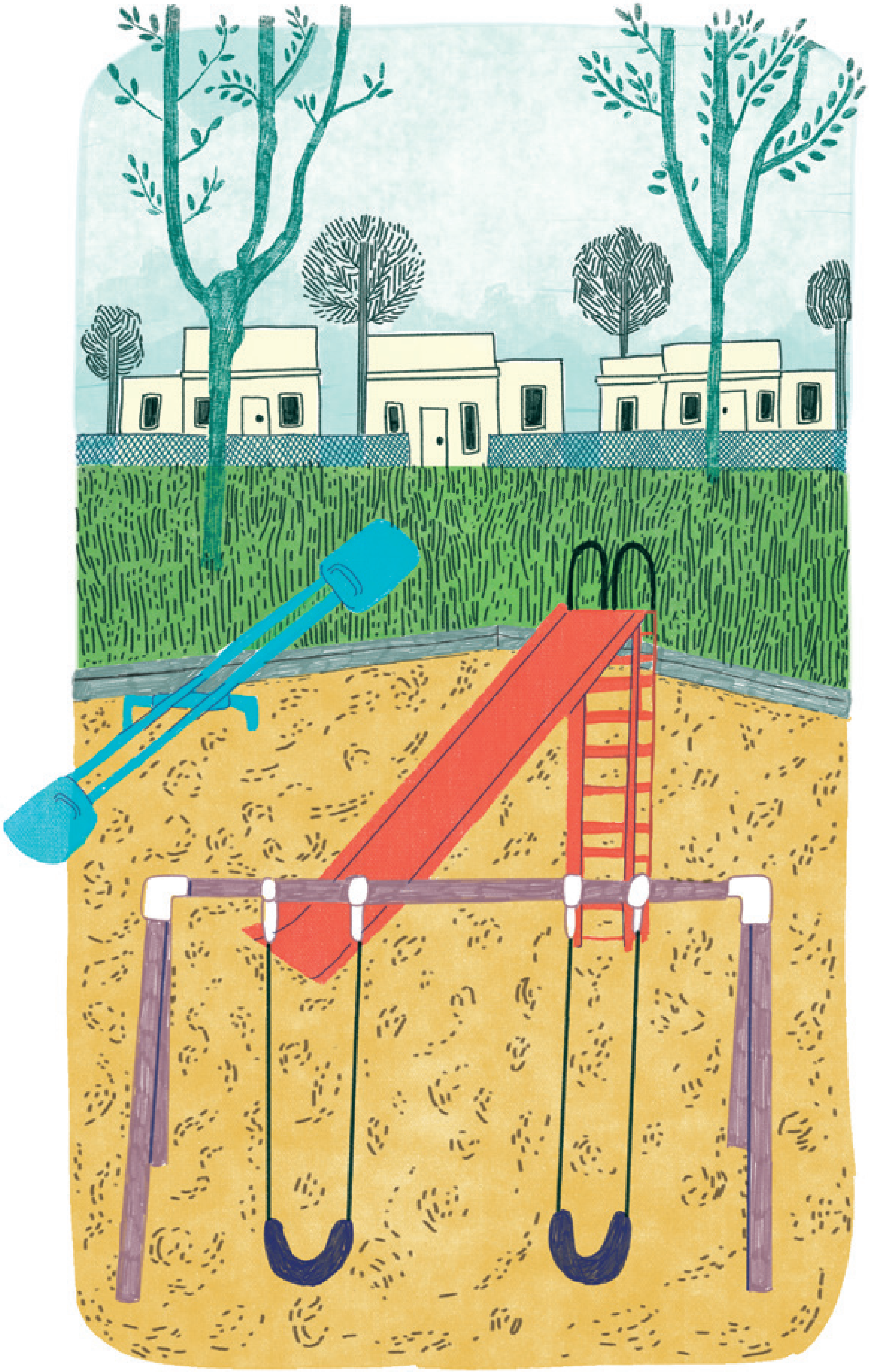

भोलू और शीनू दोनों खुशीनगर में रहने वाले अच्छे दोस्त हैं। वे एक ही स्कूल में जाते हैं, अपने खिलौने और किताबें एक दूसरे के साथ साझा करते हैं और अपने घर के पास एक पार्क में साथ-साथ खेलते हैं। एक दिन अचानक यह सब बदल गया। उनके परिवार वाले एक 'कोरोना वायरस' और उससे होने वाली बीमारी के बारे में बात करने लगें। हर कोई चिंतित दिखने लगा। भोलू और शीनू को पूरे दिन अपने घरों के अंदर रहने को कहा गया। कोरोना वायरस की वजह से उनका स्कूल भी बंद हो गया, और पार्क में खेलना भी।

एक शाम जब भोलू घर के अंदर खेलते-खेलते थक गया, तो वह छत पर जाकर पेड़ों की शाखाओं पर खेलते हुए पक्षियों और गिलहरियों को देखने लगा। जब पार्क की ओर देखा, जो एकदम खाली था, वह इसे देख अपने साथियों को याद करने लगा। वह कामना करने लगा कि वह फिर से शीनू के साथ खेल सके!

जब घर से निकलना बन्द हो गया, तो भोलू और शीनू दोनों ही खेलने के लिए शाम के समय अपनी-अपनी छतों पर जाने लगें।

दोनों एक-दूसरे को देखकर हाथ हिलाते थे, फिर अपने-अपने खेल में लग जाते थे। लेकिन इधर कई दिनों से शीनू छत पर दिखाई नहीं दे रही थी। भोलू को उसकी चिंता भी हो रही थी।

फिर कई दिनों के बाद उस दिन शीनू छत पर दिखाई दी। वह नीचे मुँह करके चुपचाप बैठी हुई थी। भोलू ने देखा कि वह बहुत देर तक वैसे ही बैठी रही। भोलू ने उसे आवाज़ दी, तो भी उसने भोलू की ओर नहीं देखा। कई बार आवाज़ देने के बाद शीनू ने उसकी ओर देखा। वह बहुत उदास लग रही थी। भोलू ने उसकी ओर देखकर हाथ हिलाया, तब भी उसने कुछ नहीं कहा। बल्कि वह अपनी छत से नीचे चली गई।

ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। शीनू तो हमेशा बहुत खुश रहती थी। भोलू ने यह बात अपनी प्यारी चाची को बताई। चाची को भी चिंता हुई। उन्होंने तुरन्त शीनू के घर फोन मिलाया। शीनू के घर से जो बात पता चली, उससे भोलू बहुत दुखी हो गया, और चाची कुछ सोचने लगीं।

बात असल में पास वाले मोहल्ले की थी, जहां शीनू के मामा जी रहते थे। खबर अच्छी नहीं थी। शीनू के मामा जी को कोरोना हो गया था। कुछ दिन तक तो मामा जी को पता भी नहीं चला। उन्होंने जरूर किसी दूषित सतह को छुआ होगा, जिससे कोरोना वायरस उनके शरीर में घुस गया। ये दूषित बूंदें या तो सांस लेने से नाक और मुँह के रास्ते या फिर हाथों से चेहरे को छूने की वजह से शरीर में घुसा होगा।

यह तो हम जानते ही हैं कि वायरस शरीर में घुसने के बाद तुरंत असर दिखाना शुरू नहीं करता। वह चुपचाप अपनी संख्या बढ़ाता रहता है। जब उसकी संख्या ज्यादा हो जाती है, तब वह शरीर पर हमला कर देता है। तब हमें उसके लक्षण यानि सिम्पटम्स दिखाई देने लगते हैं। खांसी आती है, बुखार आता है, और किसी-किसी को सांस लेने में दिक्कत भी होती है।

तो कुछ दिनों बाद मामाजी को खांसी और बुखार आने लगा। मामाजी ने तुरंत अपने आप को क्वारेंटाइन कर लिया, यानी घर के दूसरे सदस्यों से दूरी रखते हुए अलग कमरे में रहने लगे, अपने कमरे में ही खाना खाने लगे और अपने बर्तन भी खुद ही धोने लगे।

फिर जब उन्हें सांस लेने में दिक्कत होने लगी, तब उन्हें पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहाँ उनकी जांच भी हुई।

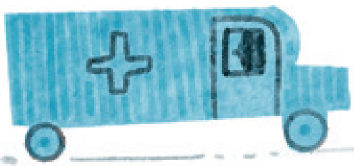

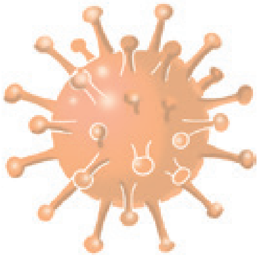

जब रिपोर्ट आई, तो पता चला कि मामा जी को कोरोना है। उन्हें अस्पताल में दाखिल करा दिया गया। घर के अन्य लोगों और उनसे मिले सभी लोगों को तुरंत क्वारेंटाइन करा दिया गया। इसका मतलब यह था कि वे किसी भी चीज के लिए बाहर नहीं जा सकते थे। उन्हें अपने घरों में ही रहना था, किसी से नहीं मिलना था और इस दौरान किसी को अपने घर के अंदर नहीं आने देना था। उनकी क्वारेंटाइन से पहले और क्वारेंटाइन का समय पूरा होने के बाद सबकी जांच हुई। अच्छी बात यह थी कि घर का और कोई सदस्य कोरोना से प्रभावित नहीं हुआ था। सब लोग ठीक-ठाक थे।

शीनू के मामा भी इलाज के बाद ठीक हो गए और वे अस्पताल से घर वापस आ गए। लेकिन अपने घर वापस पहुँचने के बाद मामा जी और घर के लोगों ने देखा कि लोग उनके पास आने से बच रहे हैं। पड़ोस के मकान वाले लोग उन्हें देखते ही अपने घर के दरवाज़े बंद कर लेते थे। फिर उन्हें पता चला कि मोहल्ले के कुछ लोग आपस में यह बात भी कर रहे हैं, कि इन लोगों की वजह से ही कोरोना मोहल्ले में आया है। अभी उस दिन मामा जी पास की दुकान से कुछ सामान लेने गए, तो दुकानदार ने उन्हें अपनी दुकान पर आने से मना कर दिया, जो उन्हें कई सालों से जानता था।

इन सब बातों से घर के सब लोग बहुत तनाव में आ गए थे। यह बात जब शीनू को मालूम हुई तो वह भी बहुत उदास हो गई। एक तो कोरोना होने से सब लोग पहले ही परेशान थे। ऊपर से मोहल्ले वालों के बर्ताव ने उन्हें और भी दुखी कर दिया था।

यह सब बातें जानकर भोलू बहुत उदास हो गया। उसे मामा जी के मोहल्ले वालों पर बहुत गुस्सा आया। लेकिन फिर भोलू की चाची ने उसे समझाया कि असल में मोहल्ले वाले ऐसा इसलिए कर रहे हैं; क्योंकि उन्हें कोरोना के बारे में सही जानकारी नहीं है। इससे भोलू के मन का गुस्सा तो खत्म हो गया, लेकिन उसे चिंता तो थी ही। लेकिन चाची ने कहा कि मैं सब ठीक कर दूंगी। जब चाची ने ऐसा कहा, तो भोलू की चिंता खत्म हो गई। उसे मालूम था कि उसकी चाची सब ठीक कर सकती हैं। वैसे तो भोलू की चाची एक जाने-माने स्कूल की प्रिंसिपल थीं, लेकिन वह समाज के बहुत सारे काम करती थीं। इसलिए शहर में उनका बहुत सम्मान था। भोलू को इस बात पर बहुत गर्व होता था, कि शहर के तमाम लोग उसकी चाची को जानते हैं।

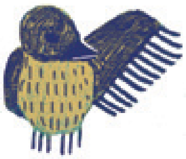

अगले दिन सुबह-सुबह भोलू की चाची अपना मास्क पहन कर घर से निकलीं, और शीनू के मामा जी के मोहल्ले में पहुँच गईं। मोहल्ले के बहुत से लोग उन्हें जानते थे। वे भी उनके साथ आ गए। इसके बाद सभी लोग मामा जी के घर के पास पहुंचे, और एक-दूसरे से दूरी बनाए रखते हुए मामा जी के पड़ोसियों से बातचीत शुरू कर दी।

भोलू की चाची ने पड़ोसियों को बताया कि "सबसे पहली बात तो यह है, कि कोई अपनी मर्जी से कोरोना या किसी भी बीमारी का मरीज नहीं बनता है। कोई भी नहीं चाहता कि उसे कोई बीमारी हो जाए। दूसरी बात यह कि कोरोना वायरस किसी को भी अपना निशाना बना सकता है।"

उन्होंने यह भी बताया कि

कोई भी व्यक्ति जिसके शरीर में कोरोना वायरस मौजूद है, वह वायरस दूसरे लोगों तक अनजाने में पहुंच सकता है। छींक या खांसी की बूंदों के साथ वायरस शरीर से बाहर आता है। ये बूँदें जहां भी गिरती हैं, वायरस वहाँ पहुँच जाता है। फिर उस जगह पर अगर किसी दूसरे का हाथ लगता है, तो वायरस उस दूसरे व्यक्ति के हाथ में पहुँच जाता है। अब अगर उस दूसरे व्यक्ति ने अपना हाथ अपने मुँह, नाक या आँख पर लगाया, तो वायरस उसके शरीर में पहुँच जाएगा।

अस्पताल से छुट्टी देते समय कोरोना के मरीज की जांच करके यह पक्का कर लिया जाता है, कि कोरोना वायरस उसके शरीर से पूरी तरह से खत्म हो चुका है। इसके बाद उस व्यक्ति में और दूसरे स्वस्थ व्यक्ति में कोई फर्क नहीं रहता। इसलिए, हमें इलाज के पूरी होने के बाद उनसे मिलने से डरना नहीं चाहिए।

भोलू की चाची ने कहा, "यदि कोरोना से ठीक हुए व्यक्ति के साथ भेदभाव और अच्छा व्यवहार नहीं किया गया तो हम उनके लिए और दूसरों के लिए कठिन स्थिति पैदा कर सकते हैं। आप सब को पता है इसका परिणाम क्या होगा?"

पड़ोसियों से कोई जवाब न आने पर भोलू की चाची ने उनसे यह भी कहा कि

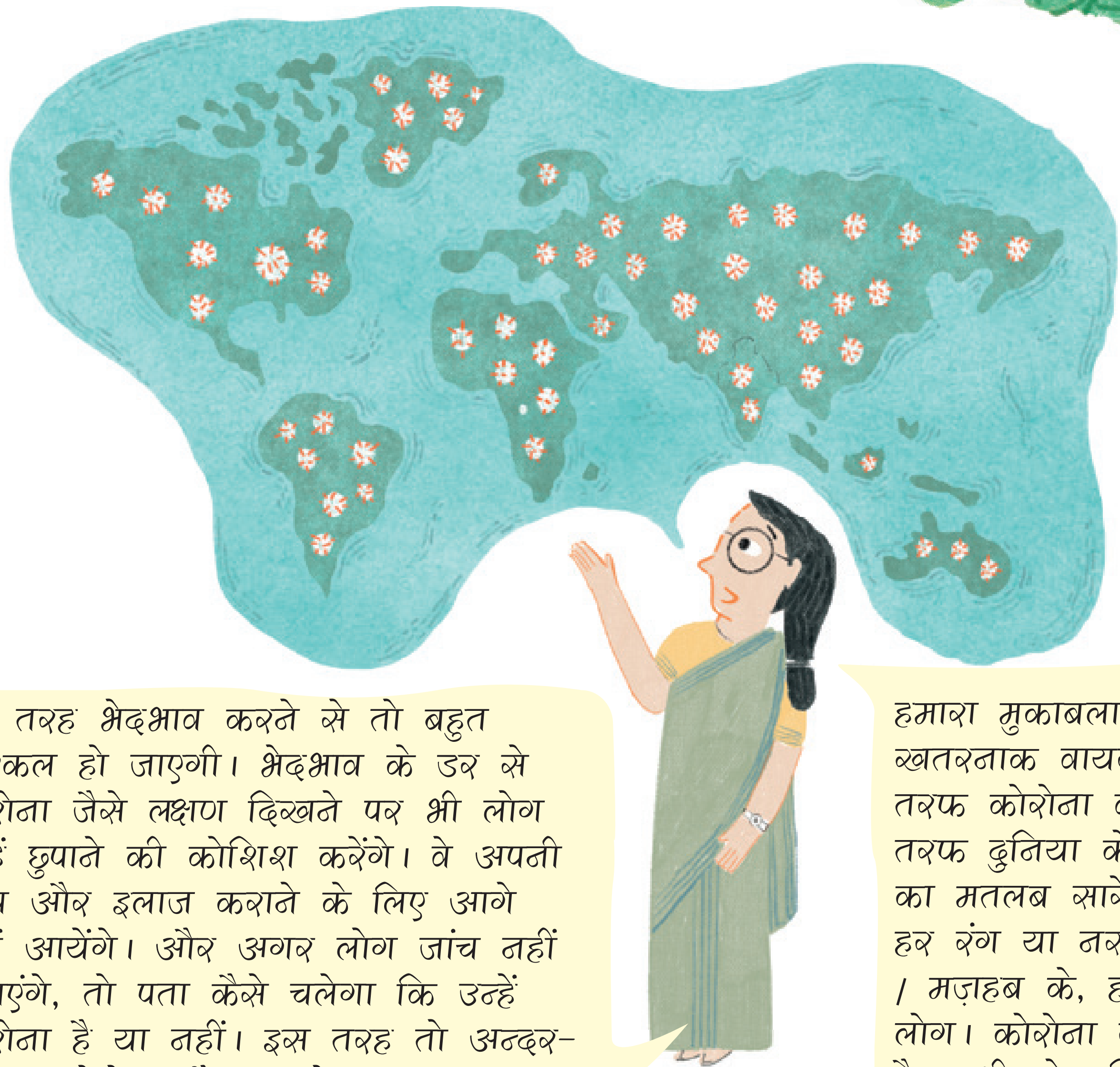

इस तरह भेदभाव करने से तो बहुत मुश्किल हो जाएगी। भेदभाव के डर से कोरोना जैसे लक्षण दिखने पर भी लोग उन्हें छुपाने की कोशिश करेंगे। वे अपनी जांच और इलाज कराने के लिए आगे नहीं आयेंगे। और अगर लोग जांच नहीं कराएंगे, तो पता कैसे चलेगा कि उन्हें कोरोना है या नहीं। इस तरह तो अन्दर-अन्दर कोरोना फैलता रहेगा।

हमारा मुकाबला कोरोना जैसे खतरनाक वायरस से है। एक तरफ कोरोना वायरस और दूसरी तरफ दुनिया के सारे इंसान। सारे का मतलब सारे... हर देश के, हर रंग या नस्ल के, हर धर्म / मज़हब के, हर उम्र के, सारे लोग। कोरोना से सबको खतरा है। तभी तो दुनिया के सब देश मिलकर कोरोना को हराने के तरीके खोज रहे हैं।

पड़ोसियों ने चाची के बात सुन सहमती से अपने सिर हिलाए। भोलू की चाची ने उनसे आगे यह भी कहा कि

चाची की बातें मोहल्ले वालों को जल्द ही समझ में आ गईं। ये बातें जानकर मोहल्ले के लोगों को अपने ऊपर अफसोस हुआ। शीनू के मामा जी के पड़ोसी अंकल तो रोने लगे। उन्होंने कहा कि "हमने बहुत बड़ी गलती की है! जब भी हम मुसीबत में थे, मामा और उनके परिवार ने हमेशा हमारी मदद की। अब, जब उन्हें हमारे समर्थन की सबसे अधिक आवश्यकता थी, तो हमने उनके साथ बुरा व्यवहार किया।" उन्होंने मामा के परिवार की ओर देखा और कहा, "हमें माफ कर दीजिए।"

मोहल्ले के दूसरे लोगों ने मामा जी से माफी माँगी। सबने मिलकर भोलू की चाची को धन्यवाद भी दिया।

घर लौटकर चाची ने भोलू को सारी बात बताई, तो भोलू बहुत खुश हुआ। सब बात शीनू को भी पता चल गई थी। शीनू ने भोलू से कहा कि

इससे भोलू और भी खुश हो गया। जब उसने यह बात चाची को बताई, तो चाची मुस्कुराने लगीं।

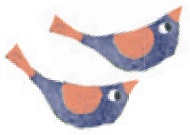

लेकिन कुछ दिनों के बाद ऐसी ही एक और बात हो गई। उस दिन भोलू के घर के सब लोग रात का खाना खाकर आपस में बातचीत कर रहे थे। तभी उनके दरवाज़े की घंटी बजी। सभी चौंक गए। इतनी रात कौन उनके यहाँ आ सकता है। दरवाज़ा खोला, तो देखा कि मास्क पहने हुए एक महिला वहाँ खड़ी हुई थी। जब उन्होंने मास्क उतारा तो सब चौंक गए। यह तो सिमरन आंटी थीं।

सिमरन आंटी चाची की पक्की सहेली थीं। वह शहर के बड़े अस्पताल में एक नर्स थीं। उनका घर दूसरे शहर में था और वह खुशी नगर में किराए पर घर लेकर रहती थीं। उनसे पूछा गया कि वे इतनी देर रात तक बाहर क्या कर रहीं थीं, तो सिमरन आंटी ने जवाब देते हुए कहा कि

मैं रात में जब हर रोज़ की तरह अपनी ड्यूटी पूरी करके अपने कमरे पर पहुंची, तो मकान मालिक ने घर में घुसने से मना कर दिया। एक किराएदार ने तो धमकी भी दी और मुझे दूर जाने के लिए कहा। मैंने उनसे विनती की कि इतनी रात में मैं कहाँ जाऊंगी, लेकिन मकान मालिक ने एक न सुनी, इसलिए मैं आपके घर आ गई।

भोलू के परिवार वालों ने सिमरन आंटी को चिंता न करने के लिए कहा। चाची ने कहा कि वह अगले दिन उनके घर के मालिक से बात करेंगी। सिमरन आंटी रात को उनके साथ रहीं।

सिमरन आंटी बहुत अच्छी थीं। वह जब भी भोलू के घर आतीं, उसके साथ शतरंज खेलती थीं। असल में उन्होंने ही भोलू को शतरंज खेलना सिखाया था। जब भी सिमरन आंटी घर आतीं, भोलू के लिए बहुत सी मिठाइयाँ लेकर आती थीं। इस बार भोलू के जन्मदिन पर उन्होंने एक अच्छा सा गाना भी सुनाया था। सिमरन आंटी को परेशान देखकर भोलू को बहुत गुस्सा आया।

उसने टी.वी. पर सुना था कि डॉक्टरों, नर्सों, स्वच्छता कार्यकर्ता, पुलिस और कोरोना से बचाने वाले 'हीरो' को परेशान करने पर सजा भी हो सकती है। उसने कहा कि इस बात की पुलिस में रिपोर्ट करनी चाहिए। लेकिन चाची ने कहा कि चिंता करने की बात नहीं है। सब ठीक हो जाएगा।

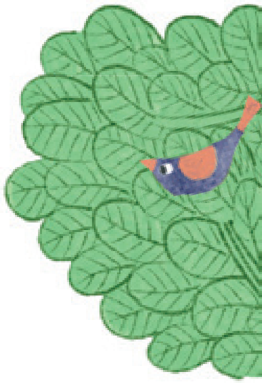

अगले दिन चाची, सिमरन आंटी और कुछ अन्य लोग अपने मास्क पहनकर सिमरन आंटी के मकान मालिक के पास पहुँच गए। आपस में दूरी बनाये रखते हुए सब बातचीत करने लगे। चाची ने पहले तो मकान मालिक को डांटा, और फिर समझाया। भोलू की चाची ने उन्हें बताया कि

चाची ने उन्हें यह भी बताया कि

क्या आपको पता भी है कि कोरोना से बचाने वाले हीरो को परेशान करने या उनके काम में रुकावट डालने वालों को कानूनन सजा भी हो सकती है? वह तो सिमरन ने पुलिस को फोन नहीं किया, वरना रात में ही पुलिस इंस्पेक्टर वहाँ पहुँच जाते। असल में वह सीधी सादी है इसीलिए ऐसा नहीं किया और चुपचाप देर रात मेरे घर आ गईं।

सारी बातें सुनकर मकान मालिक को अपनी गलती का एहसास हुआ। वह भोलू की चाची से माफी मांगने लगा। चाची ने कहा कि उन्हें इसके गलती के लिए सिमरन से माफी मांगनी चाहिए। ऐसा करने पर सिमरन ने मकान मालिक से कहा कि

बाद में भोलू को यह बात पता चली तो वह बहुत खुश हुआ। उसने चाची से कहा,

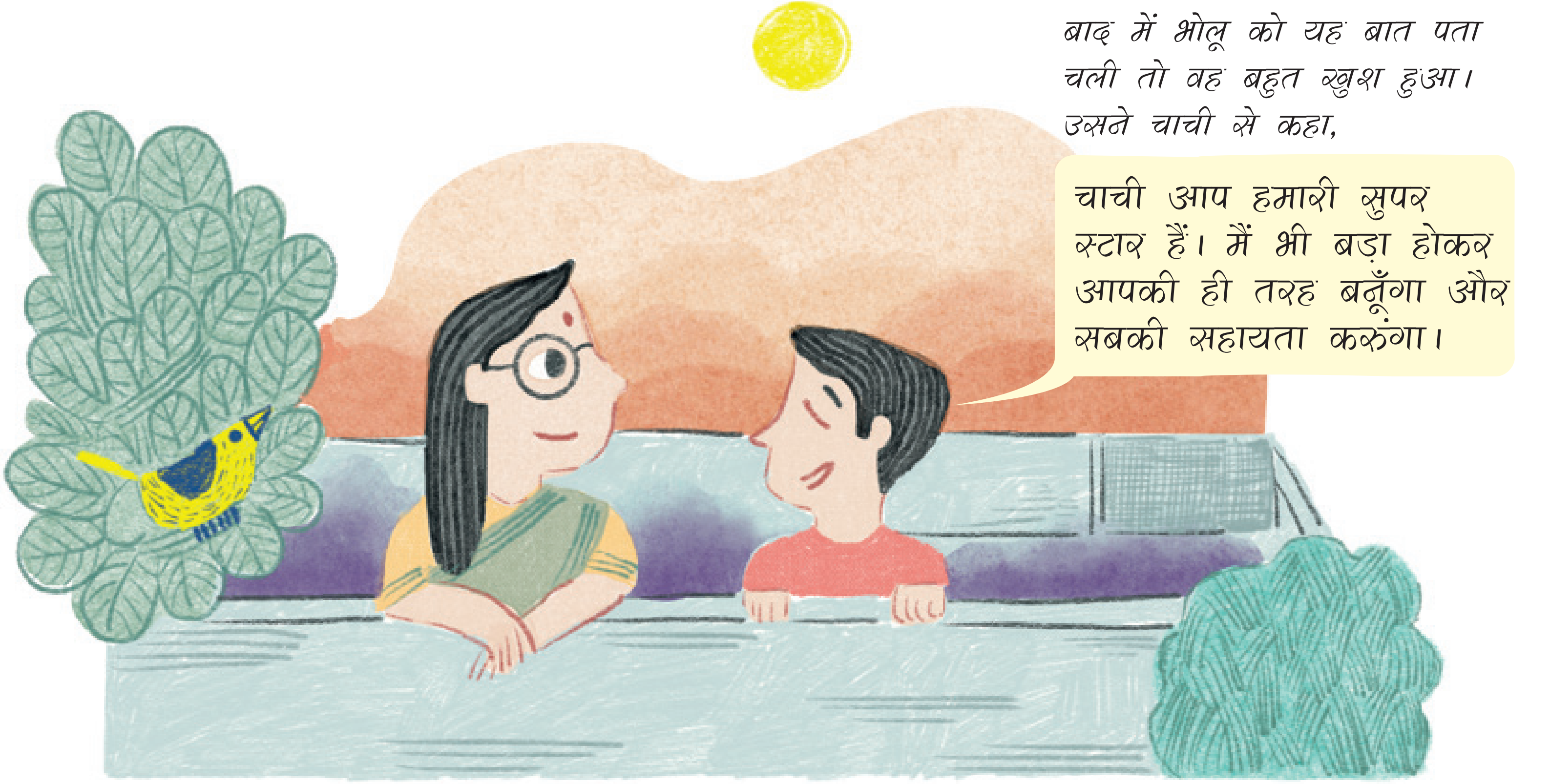

COVID&19 संबंधित जानकारी के लिए

राज्य हेल्पलाइन नंबर या स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के 24x7 हेल्पलाइन नंबरों पर कॉल करें 1075 (टोल फ्री) | 011–23978046, ई–मेल करें: ncov2019@gov.in, ncov2019@gmail.com

#TogetherAgainstCOVID19